प्रेमपन्थ

योजन २

योजक
वालजी गोविन्दजी देसाअि

अनुवादक
सोमेश्वर पुरोहित

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर
अहमदाबाद

प्रेमपन्थ

योजन २

योजक

ी गोविन्दजी देसा

अनुवादक

सोमेश्वर पुरोहित

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर
अहमदाबाद

अनुक्रमणिका

प्रेमपन्थ

योजन २

मिली है । कारण यह है कि जिस हद तक मैं अपने वर्तमान शरीरके अस्तित्वको मानता हूं, अुसी हद तक पुनर्जन्मको भी मानता हूं । अिसलिअे मैं जानता हूं कि मनुष्यका अल्प प्रयत्न भी बेकार नहीं जाता ।

(छ)

मैं मानता हूं कि आत्मा अमर है । अिससे सम्बन्ध रखनेवाला अेक अुदाहरण मैं आपको समुद्रका देता हूं । समुद्र जलकी बूंदोंसे बना है; अेक अेक बूंद अलग होती है, फिर भी वह सारे समुद्रका भाग होती है । अिस तरह समुद्र अेक भी है और अनेक भी है । हम सब अिस जीवन-रूपी समुद्रकी छोटी छोटी बूंदें हैं । मेरे सिद्धान्तका अर्थ यह है कि मुझे जीवनके साथ, प्रत्येक जीवके साथ अेकरूप होना चाहिये, और भगवानके [illegible] समान होनेके कारण जीवनमें जो भलाई दिखाई देती है, अुस भलाईका मुझे आनंद अनुभव करना चाहिये । जीवमात्र समुद्रका भाग ही [illegible] है ।

(ड)

जीवन मृत्युकी तैयारी है। भगवान जाने अैसा क्यों होता है, लेकिन यह सच है कि अिस अनिवार्य और भव्य घटनाका विचार करते ही हम कांप अुठते हैं। और कुछ नहीं तो भगवानसे डर कर चलनेवाले प्रत्येक मनुष्यके लिअे पिछले जीवनसे अधिक अच्छे जीवनकी तैयारीके रूपमें भी मृत्यु भव्य है। (मीराबहनको०)

(ढ)

मृत्यु सज्जनको अधिक अच्छी दशामें पहुंचाती है और दुर्जनके लिअे कल्याणकारी छुटकारेका काम करती है — अैसी दृढ श्रद्धा हमारे मनमें हो, तो मरनेके समय सन्तोष रहता है। (मीराबहनको०)

(ण)

अीश्वरकी कृपा अीश्वरका काम करनेसे आती है। तुमको अीश्वरका काम करना है। कभी चरखा चलाते हो? चरखा चलाना सबसे बड़ा यज्ञ है। रोते रोते भी चरखा चलाओ। (श्री आनन्द हिंगोराणीको अुपदेश, मूल हिन्दी; १५–१०–'४४)

(घ)

मुझे वीरगति प्राप्त करनेकी अभिलाषा नहीं है। परन्तु प्रेमधर्मकी रक्षाके लिअे जिसे मैं अपना सर्वोच्च कर्तव्य समझता हूं, अुसका पालन करते हुअे यदि वीरगति मेरे सामने आ कर खड़ी हो जाय, तो कहा जायगा कि अुसे पानेकी पात्रता मैंने सिद्ध कर ली है।

(ङ)

मुझे पुनर्जन्मकी अिच्छा नहीं है। लेकिन अगर मुझे फिरसे जन्म लेना ही पड़े तो मैं किसी हरिजनके घर जन्म लेना चाहूंगा, ताकि मैं हरिजनोंके शोक, दुःख और अपमानमें हिस्सा ले सकूं और

(ग)

अैसे पुरुष मर गये, यह कहना झूठ बोलनेके बराबर है। अुनका प्रभाव अैसा सदा हमारे पर रहता है। लोकमान्यकी वीरता, त्याग, अटूट अुद्यमशीलता तथा देशभक्तिको अपने जीवनमें ओतप्रोत करके हम अुनका अविनाशी स्मारक खड़ा करें।

४
वीरगति

(क)

वीरगतिसे वीर पुरुषके आत्म-समर्पण पर अन्तिम मुहर लगती है और अुसकी विजयका पूर्व-रंग रचा जाता है। (मि० आर्थर मूरको लिखे ४–१२–'४० के पत्रसे)

(ख)

अैसा कौनसा सुधारक है, जिसका सिर काट कर आप ले आयें तो लोग आपको अिनाम देनेके लिअे

अेक व्यक्तिके दोषको हम सारे समाजके मत्थे न मढ़ें । हम अपने मनमें बदला लेनेकी भावना न रखें ।

अब्दुल रशीदकी में वकालत करना चाहता हूं । . . . अुसके कुकर्मका हेतु भले कुछ भी रहा हो लेकिन दोष हमारा है । अखबारवाले जीती-जागती महामारी जैसे बन गये हैं; वे असत्य और निन्दाकी छूत फैलाते हैं । वे केवल शब्दकोशमें समाविष्ट सारे बुरे शब्दोंका ही अुपयोग करते हैं और पाठकोंके शका-रहित तथा ग्रहणशील मनमें बार-बार हलाहल विष अुड़ेलते हैं । रोके न गये अिस निर्लज्ज गुप्त और दुष्ट प्रचारने ही यह निर्दय और भयानक काम किया है । अिसलिअे अब्दुल रशीद पर सवार हुअे पागलपनके लिअे हम शिक्षित और अर्ध-शिक्षित लोग ही जिम्मेदार हैं ।

अैसी आशा रखना शायद अधिक हो परन्तु स्वामीजीकी महत्ताका विचार करते यह आशा रखना अधिक नहीं होगा, कि स्वामीजीके पवित्र रक्तसे हमारी दुष्टता धुल जायगी, हमारे हृदय शुद्ध हो जायगा और मानव-वंशके ये

|सू बहानेका

यह मौका शोक करनेका या आंाोंयेका पाठ
नहीं है । अिस मौके पर तो हमें कित करना
अपने हृदय पर तपी हुअी मुद्रासे उन गिरायें,
चाहिये । . . . हम शोकके आंसू ौर अुनमें
बल्कि अपने हृदयोंको शुद्ध करें श भरें ।
श्रद्धानन्दजीके तेज और श्रद्धाका उ १९२६)
(गुवाहाटी कांग्रेसमे दिये गये भाषणसे,

५

राष्ट्रीय सप्ताह

। हैं, जो
६ और १३ अप्रैलके दो दिन अं नही जा
हमारे राष्ट्रीय जीवनमे कभी भी भूले अनोखा
सकते । १९१९ की छठी अप्रैलने अेकान और
दृश्य देखा, जिसमें देशके हिन्दू, मुसलमल हुअे ।
दूसरे लोग बिना किसी संकोचके शामि भी था।
वह दलित वर्गोके लिअे स्वतन्त्रताका दिन की नीव
अुस दिन हमारे देशमें सच्चे स्वदेशी-धर्मानून-भग
पडी । अुसी दिन सारे देशने सविनय क

भी किया। और अुसी दिन सामूहिक स्वतंत्रता तथा सामूहिक विरोधकी भावना देशमें सर्वत्र फैली।

१३ अप्रैलको जलियावाला बागका हत्याकाण्ड हुआ, जिसमें हिन्दू, मुसलमान तथा सिक्खोंके खूनका त्रिवेणी-संगम हुआ। आज तक जहां केवल घूरेका ढेर था, वह स्थान अब सारे भारतके लिअे राजनीतिक यात्राका पवित्र धाम बन गया। भारत जब तक जिन्दा रहेगा, तब तक वह तीर्थस्थान बना रहेगा। . . .

अिस सप्ताहमें हमें मुख्यतः आत्म-शुद्धि और आत्म-परीक्षा करनी चाहिये। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि शुद्ध आचरण अर्थात् सत्य और अहिंसाके पालनके बिना अिस दुःखी देशको हम सुखी नहीं बना सकेंगे। अैसी शुद्धि प्रार्थना और अुपवासके द्वारा ही प्राप्त हो सकती है। अिसलिअे जिन्हें प्रार्थना और अुपवासमें श्रद्धा है, अुनसे मैं कहता हूं कि वे ६ और १३ अप्रैलको अुपवास तथा प्रार्थना करें।

अभी हमारी स्थिति अैसी नहीं है कि हम हिन्दुओं तथा अहिन्दुओंकी अेकताकी घोषणा कर

सकें । अिसलिअे अभी तुरन्त तो हमें अिस प्रश्नको खुद ही अपना काम करनेके लिअे छोड़ देना चाहिये । हिन्दुओंको छुआछूतका मैल धो डालना चाहिये । वे हरिजनोंको अपने मित्र बनायें, अुनके कष्ट दूर करनेके लिअे बन सके अुतने पैसे अलग रखें और विविध अुपायों द्वारा हरिजनोंको अिस बातका विश्वास करा दें कि अब आगे कोअी अुनका अपमान नहीं करेगा, कोअी अुन्हें हिकारतकी नजरसे नहीं देखेगा ।

मैं हिन्दू-मुस्लिम-अेकता, खादी और अस्पृश्यता-निवारणको स्वराज्यकी बुनियाद मानता हूं । अिन पक्की बुनियाद पर अैसा भव्य और सुन्दर भवन खड़ा किया जा सकेगा, जैसा दुनियाने कभी देखा न होगा । अिस बुनियादके बिना स्वराज्यका जो भवन खड़ा किया जायगा, वह बालू पर खड़े किये गये मकानकी तरह होगा ।

खादी अेक अैसा काम है, जिसमें देशके स्त्री-पुरुष, बालक-बूढ़े, अमीर-गरीब सब भाग ले सकते हैं और हाथमें हाथ मिलाकर प्रयत्न कर सकते हैं । अिस सप्ताहमें खादी बेची जाय और स्वेच्छा-[illegible]

व्यवस्था की जाय। राष्ट्रीय सप्ताह मनानेकी अलग अलग रीतियां खोज निकालना स्थानीय कार्यकर्ताओंका काम है। मैं तो अैसी चीजका ही विचार कर सकता हू, जिसमें लाखो लोग भाग ले सकें और स्वराज्य प्राप्त कर सकें। अिस प्रकार सब दृष्टियोंसे सन्तोष देनेवाली चीज चरखेके सिवा दूसरी कोअी मुझे नही मिलती।

हम अेक काम भी सच्चे तथा सुन्दर ढगसे पूरा कर सकें, तो कितना अच्छा हो! चरखा अेक अैसी चीज है, जिस पर सब वर्गोकी स्त्रियां, पुरुष, लडके-लडकियां, सब कोअी काम कर सकते हैं। यह अैसी चीज है जो गरीब और अमीर दोनोंको प्रेमके बन्धनमें बांध सकती है और आधे भूखे रहनेवाले किसानकी अंधेरी और टूटी-फूटी झोपडीमें सूर्य-प्रकाशकी किरणें पहुंचा सकती है।

['यंग अिण्डिया' में छपे हुअे गांधीजीके १९२५-२६ के दो लेखोंके आधार पर यह प्रकरण तैयार किया गया है।

संपादक]

६

आश्रममें राष्ट्रीय सप्ताहका अुत्सव

[गांधीजी १८९३ में २३ वर्षकी अुमरमें दक्षिण अ
गये थे और १९१५ के जनवरी महीनेके दूसरे सप्ताहमें
वर्षकी अुमरमें बम्बअीके अेपोलो बन्दर पर अुतरे थे। अुन
जिन लोगोंने गांधीजीके दर्शन किये और जो लोग
मोटरके पीछे थोड़ी दूर तक दौड़े, अुनमें अेक मैं भी
कोचरबमें आश्रमकी स्थापना हुअी, अुसी वर्ष मैं वहां
था। अुस समय तक चरखेकी खोज नहीं हुअी थी, कि
आश्रमके सब लोग 'शरीर-श्रम' करते थे। मेरी डायरीमें
अनुसार २ अक्तूबर, १९१५ के दिन मैंने गांधीजीके
बैठकर अनाज पीसा था। अिसके सिवा, गांधीजीके साथ
सब सड़कके अुस पारके कुअें पर पानी भी भरने जाते
१९२६ में मैं साबरमती आश्रममें था। अुस वर्ष आ
राष्ट्रीय सप्ताहका जो अुत्सव मनाया था, अुसमें मैंने
भाग लिया था। नीचे अुस लेखका सार दिया गया
जिसमें श्री महादेव देसाओने आश्रमके अिस अुत्सवका
लिखा था।

परन्तु जिस बालकने पहले दिन ४४४४ तार कात कर जिस सप्ताहके अुत्सवमें नया रग पूरा था, अुसका यश भला कोअी छीन सकता था? अुसने पहले दिन ४४४४ तार कातनेके बाद आखिरी दिन फिर ७००० तार काते। जिसके फलस्वरूप सारे आश्रमके कातनेवालोने सप्ताहमे कुल जितने तार काते, अुनसे जिस बालकके तारोकी सख्या बढ गअी। यह सख्या १७२४४ तार अथवा लगभग २३००० गज थी। जिसका अर्थ यह हुआ कि ७॥ दिनका अुसका औसत प्रतिदिन ३००० गजसे अूपर पहुचता था। जिसमे यह बात और जोड़ दी जाय कि अुसने अपनी रुअी साफ करके खुद अपनी पूनिया बनाअी थी।

अब हम अतिम दिनकी कताअीकी असाधारण गतिका परिणाम देखे:

कातनेवाले	तार	प्रति व्यक्ति औसत
पुरुप	४४४९३	८४०
स्त्रिया	२७४८८	८८७
कुमार	६५४८५	२३३९

दिन ७२८५ और ७२२५ तार का
महारथी निकल आये। लेकिन अ
चमत्कार तो सामने आना बाकी
भाओीने पूरे सप्ताहमें लगन और अे
अपने औजारोंको चमकते रखनेका का
लिया था — विशेष तकुवे, विशेष मा
चरखा और विशेष पूनियां। विशेष प्र
होगी ही! और अुनकी प्रार्थना अ
फली। अगले दिन यानी छठे दिन शाम
प्रार्थनासे घर जानेके बाद अुन्होंने अप
अखंड चरखा शुरू किया और सवेरे आधा
नित्यक्रियामें खर्च करके दूसरे दिन शामके
प्रार्थनाकी घंटी होने पर अपनी साधना
सब लोग अुनके तारोंकी संख्या सुननेको
रहे थे। जब प्रार्थनामें अुनके तारोंक
९११९ बताओी गओी, तब सबको लगा कि
अपूर्व बात हो गओी है। और वह अपूर्व
ही। ९११९ तारका अर्थ है १२१६० ग
जिसका अर्थ यह हुआ कि अुन्होंने प्रति घ
गजकी अखण्ड गतिसे २२॥ घंटे कताओी

परन्तु जिस बालकने पहले दिन ४४४४ तार कात कर अिस सप्ताहके अुत्सवमें नया रंग पूरा था, अुसका यश भला कोअी छीन सकता था? अुसने पहले दिन ४४४४ तार कातनेके बाद आखिरी दिन फिर ७००० तार काते। अिसके फलस्वरूप सारे आश्रमके कातनेवालोंने सप्ताहमें कुल जितने तार काते, अुनमें अिस बालकके तारोंकी संख्या बढ़ गअी। यह संख्या १७२४४ तार अथवा लगभग २३००० गज थी। अिसका अर्थ यह हुआ कि ७॥ दिनका अुसका औसत प्रतिदिन ३००० गजसे अूपर पहुंचता था। अिसमें यह बात और जोड़ दी जाय कि अुसने अपनी रुअी साफ करके खुद अपनी पूनियां बनाअी थीं।

अब हम अंतिम दिनकी कताअीकी असाधारण गतिका परिणाम देखें:

कातनेवाले	तार	प्रति व्यक्ति औसत
पुरुष	४४४९३	८४०
स्त्रियां	२७४८८	८८७
कुमार	६५४८५	२३३९

दिन ७२८५ और ७२२५ तार कातनेवाले दो महारथी निकल आये । लेकिन अभी अंतिम चमत्कार तो सामने आना बाकी था । अेक भाअीने पूरे सप्ताहमें लगन और अेकाग्रतापूर्वक अपने औजारोंको चमकते रखनेका कार्य हाथमें लिया था — विशेष तकुवे, विशेष मालें, विशेष चरखा और विशेष पूनियां । विशेष प्रार्थना भी होगी ही ! और अुनकी प्रार्थना अनोखे ढंगसे फली । अगले दिन यानी छठे दिन शामको ८ बजे प्रार्थनासे घर जानेके बाद अुन्होंने अपना खास अखंड चरखा शुरू किया और सवेरे आधा-पौन घंटा नित्यक्रियामें खर्च करके दूसरे दिन शामके ७ बजे प्रार्थनाकी घंटी होने पर अपनी साधना पूरी की । सब लोग अुनके तारोंकी संख्या सुननेको अधीर हो रहे थे । जब प्रार्थनामें अुनके तारोंकी संख्या ९११९ बताअी गअी, तब सबको लगा कि यह कुछ अपूर्व बात हो गअी है । और वह अपूर्व वस्तु थी ही । ९११९ तारका अर्थ है १२१६० गज सूत । अिसका अर्थ यह हुआ कि अुन्होंने प्रति घंटा ५४० गजकी अखण्ड गतिसे २२॥ घंटे कताअी की ।

परन्तु जिस बालकने पहले दिन ४४८४ तार कात कर अिस सप्ताहके अुत्सवमें नया रंग पूरा था, अुसका यश भला कोअी छीन सकता था? अुसने पहले दिन ४४४४ तार कातनेके बाद आखिरी दिन फिर ७००० तार काते। अिसके फलस्वरूप सारे आश्रमके कातनेवालोंने सप्ताहमें कुल जितने तार काते, अुनसे अिस बालकके तारोंकी संख्या बढ़ गअी। यह संख्या १७२४४ तार अथवा लगभग २३००० गज थी। अिसका अर्थ यह हुआ कि ७॥ दिनका अुसका औसत प्रतिदिन ३००० गजसे अूपर पहुंचता था। अिसमें यह बात और जोड़ दी जाय कि अुसने अपनी रुअी साफ करके खुद अपनी पूनियां बनाअी थी।

अब हम अंतिम दिनकी कताअीकी असाधारण गतिका परिणाम देखें:

कातनेवाले	तार	प्रति व्यक्ति औसत
पुरुष	४४४९३	८४०
स्त्रियां	२७४८८	८८७
कुमार	६५४८५	२३३९

बालवर्ग	६४३२	५८५
दिनके कुल तार	दिनका प्रति व्यक्ति औसत	दिनका सामान्य औसत
१४३८९८	११७०	२७१

पांच स्त्री-पुरुषोंने बारी बारीसे बैठ कर अेक करघा दिन-रात चलाया था। अुसका ७।। दिनका परिणाम अिस प्रकार है :

कुल घंटे	१८०
कुल आदमी	४०
कुल अुत्पादन	१९० गज
	[२१ अिंच अर्ज]

आश्रममें वृद्धसे वृद्ध हैं गांधीजी और कस्तूरबा। अुनके तारोंकी संख्या क्रमसे ३८२९ और ४२२६ थी। और आश्रमके छोटेसे छोटे बालक — अुनकी पौत्री — ने ४३२३ तार काते थे। . . .

७

मृत्युका भय

[गाधीजीका गुजरातीमें लिखा यह लेख ता० १८-८-'२१ के 'नवजीवन' में छपा था। योजक]

मैं स्वराज्यकी बहुतसी व्याख्यायें अिकट्ठी कर रहा हूं। अुनमें अेक यह व्याख्या भी शामिल है: स्वराज्यका अर्थ है मृत्युके भयका त्याग। जो प्रजा मृत्युके भयसे घबराती है, वह स्वराज्य प्राप्त नहीं कर सकती, न वह प्राप्त किये हुअे स्वराज्यकी रक्षा कर सकती है।

अंग्रेज मौतको जेबमें रखकर घूमते हैं। अरब और पठान लोग मौतको मामूली बीमारी मानते हैं, अपने सगे-सम्बन्धियोंकी मृत्यु होने पर वे रोते या विलाप नहीं करते। बोअर स्त्रियां मृत्युके भयको जानती ही नहीं थी। बोअर-युद्धके समय हजारों बोअर स्त्रियां विधवा हो गअी थीं, लेकिन अिसकी अुन्होंने परवाह नहीं की। भले मेरा पति या पुत्र मर गया, लेकिन मेरे देशकी अिज्जत तो रह गअी, और यदि देश गुलाम बन जाय तो

पति या पुत्रको लेकर क्या होगा? गुलाम सन्तानोंका पालन-पोषण करनेके बजाय अुनके शवको दफनाकर अुनकी आत्माका स्मरण करना ही काफी है। अिस प्रकार अपने मनको समझा कर असंख्य बोअर स्त्रियोंने धीरज रखा और अपने प्रियजनोंका मोह छोड़ दिया।

ये सब तो मारते हैं और मरते हैं; लेकिन जो मारते नहीं हैं और मरते हैं, अुनका क्या? वैसे लोगोंकी दुनिया पूजा करती है; अुनसे देश समृद्ध बनता है। अंग्रेज और जर्मन दोनों लड़े; दोनोंने अेक-दूसरेको जन-धनकी हानि पहुंचाअी। नतीजा यह हुआ कि दुश्मनी बढ़ी है, अशान्ति बढ़ी है, और आज यूरोपकी स्थिति बड़ी करुण हो गअी है; वहां पाखण्ड बढ़ा है और अेक-दूसरेको धोखा देनेकी कोशिश चल रही है। परन्तु मृत्यु-भयको छोड़नेका हम जो प्रयास कर रहे हैं, वह शुद्ध यज्ञ है। अिसलिअे हम थोड़े ही समयमें बहुत बड़ी विजय पानेकी आशा रखते हैं।

जब हमें स्वराज्य मिलेगा, तब हममें से बहुतेरे लोगोंने मृत्युका भय अवश्य छोड़ दिया होगा।

अथवा हमें स्वराज्य नहीं मिला होगा। अभी तक तो प्रायः जवान लडके ही मरे हैं। अलीगढमें जो लोग मरे वे सब २१ वर्षके भीतरके थे। अुनको कोअी पहचानता नहीं था। यदि सरकारको आगे भी गोलीबार करना ही हो, तो मैं किसी प्रथम पंक्तिके मनुष्यकी कुरबानीकी आशा रखे बैठा हूं।

बालकों, नौजवानों या बूढोंके मरनेमें हम भयभीत क्यों हों? अेक क्षण भी अैसा नहीं जाता, जब दुनियामें कहीं न कहीं जन्म या मृत्यु नहीं होती। हमें यह समझ ही लेना चाहिये कि जन्मसे खुश होने और मृत्युसे डरनेमें भारी मूर्खता है। जो लोग आत्मवादी हैं — और हममें से कौन हिन्दू, मुसलमान या पारसी आत्माके अस्तित्वको नहीं मानता? — वे जानते हैं कि आत्मा मरती नहीं, जितना ही नहीं, जो जीते हैं और जो मर चुके हैं अैसे सब प्राणी अेक ही हैं, अुनके गुण अेक ही हैं। तो फिर दुनियामें अुत्पत्ति और लय, जो प्रत्येक क्षण चलते रहते हैं, अुनसे हम क्यों तो खुश हों और क्यों दुःखी हों? सारे देश तक हमारी भावना पहुंचे और देशमें जितने जन्म हों अुन सबको

हम अपने घर हुअे मानें, तो कितने जन्मोंका अुत्सव हम मनायेंगे? देशमें जितनी भी मृत्युअें हों अुन सबके लिअे हम अगर रोने लगें, तो हमारी आंखोंके आंसू कभी सूखेंगे ही नही। अैसा विचार करके हमें मृत्युका भय छोड़ना ही चाहिये।

प्रत्येक हिन्दुस्तानी दूसरे राष्ट्रोंसे अधिक ज्ञानी, अधिक आत्मवादी होनेका दावा करता है। फिर भी मृत्युके सामने हम जितने लाचार बन जाते हैं, अुतने शायद ही दूसरे लोग बनते होंगे; और अैसा मालूम होता है कि जितने लाचार हिन्दू बनते हैं, अुतने लाचार दूसरे हिन्दुस्तानी नही बनते। अेक जन्म होने पर हम घरमें धाधली मचा देते हैं और अेक मृत्यु होने पर रोना-कूटना मचा कर सारे पड़ोसियोंको हैरान कर डालते हैं। यदि हमें स्वराज्य लेना है और लेकर अुसे सुशोभित करना है, तो हमें मृत्युका भय पूरी तरह छोड़ देना चाहिये।

और जो लोग मृत्युका भय छोड़ेंगे, अुन्हें जेलका भय तो हो ही कैसे सकता है? पाठक विचारेंगे तो अुन्हें मालूम होगा कि हमें स्वराज्य लेनेमें जो

देर हो रही है, अुसका अेकमात्र कारण यह है कि मृत्यु और अुससे छोटे दु:खोंको सहन करनेकी शक्तिका हममें अभाव है ।

जैसे-जैसे अधिकसे अधिक निर्दोष आदमी जान-बूझकर मृत्युका आदर-सत्कार करनेको तैयार होंगे, वैसे-वैसे दूसरे लोग बचेंगे और प्रजाको कमसे कम दु:ख होगा। स्वेच्छासे सहन किया हुआ दु:ख दु:ख नहीं रहता; वह सुख बन जाता है । जो दु:खसे भागता है, वह कष्ट भोगता है और दु:खके आने पर अधमरा बन जाता है । जो आनन्दके साथ दु:खसे मिलने जाता है, अुसे दु:खके विचार-मात्रसे अुत्पन्न होनेवाला पहला दु:ख तो होगा ही कैसे ? और अैसे व्यक्तिका आनन्द क्लोरोफॉर्मका काम करता है ।

अिस विषय पर मुझे अिस समय लिखना पड़ा, अिसका कारण यह है कि अगर अिसी वर्ष हमें स्वराज्य लेना हो, तो मृत्युका विचार भी हमें कर लेना चाहिये । पहलेसे तैयारी करनेवाला आदमी बहुत बार दुर्घटनासे बच जाता है, सम्भव है हमारे मामलेमें भी अैसा ही हो । मेरी यह दृढ़ मान्यता है कि स्वदेशी-व्रतका पालन अेक अैसी ही तैयारी

है । स्वदेशी-आन्दोलनमें अगर हमें विजय मिल जा
तो मैं मानता हूं कि सरकार या दूसरे किसीको
हमारी परीक्षा करनेकी जरूरत न रह जाय ।

फिर भी हमे गाफिल नहीं रहना चाहिये।
सत्ता अंधी और बहरी होती है; वह अपने पासकी
घटनाओंको नही देख सकती; अपने कानमें बजने
वाले ढोल भी वह नही सुन सकती । अिसलिये
यह कहना कठिन है कि मदसे अुन्मत्त बनी हुअी
सरकार क्या क्या नही करेगी । अिसलिये मैं
मानता हू कि देशसेवकोंको मृत्यु, जेल और अैसी
ही दूसरी आपत्तियोंका मित्रके रूपमें स्वागत करनेके
लिअे तैयार रहना चाहिये ।

बहादुर आदमी जिस प्रकार हंसते-हंसते
मृत्युसे भेट करता है, अुसी प्रकार वह सावधान
भी रहता है । शान्तिपूर्ण युद्धमें असावधानीको
गुंजाअिश है ही नही । हमें नैतिकताके विरुद्ध
अपराध करके जेलमें नहीं जाना है, या फांसीके
तख्ते पर नहीं चढ़ना है । हमें तो सरकारके
... कानूनोंका विरोध करते हुअे फांसी पर

८

शराबका बुरा व्यसन

(क)

द्राक्षासव वगैरा नशीले पेयोंके अपयोगसे शरीर और मनको नुकसान पहुंचता है। अितना ही नहीं, हमारी नैतिक भावना नष्ट हो जाती है और आत्म-संयमकी सारी शक्ति खतम हो जाती है।

(ख)

अफीम, गांजा वगैरा मादक पदार्थ और शराब ये शैतानके दो हाथ हैं।

(ग)

भूखों मरनेवाले स्त्री-पुरुष छोटी-छोटी चोरियां करते हैं, तो अुन पर मुकदमा चलता है और अुन्हें सजा होती है। अैसी चोरियोंके मुकाबले हिन्दुस्तानमें शराब पीनेको मैं ज्यादा बड़ा गुनाह मानता हूं। मैं अपराधीको सजा देनेकी मध्यम पद्धतिको बड़ी अनिच्छासे और प्रेमधर्मके संपूर्ण साक्षात्कारके अभावमें लाचार बनकर सहन करता हूं। और जब तक मैं अिसे सहन करता हूं, तब तक जो लोग शराब बनाते

हैं और वार वार चेतावनी देने पर भी हठपूर्वक शराब पीते हैं, अुन्हें सजा देनेकी मुझे हिमायत करनी चाहिये । मेरे बच्चे यदि आगमें या गहरे पानीमें जायें, तो अुन्हें जबरन् रोकनेमें मैं हिचकिचाता नही । प्रज्वलित अग्नि या भारी पूरवाली नदीमें पड़नेके बनिस्वत शराब पीनेको मैं कही भयकर समझता हूं । आग या पानी केवल शरीरका ही नाश करता है, लेकिन शराब तो शरीर और आत्मा दोनोंका सत्यानाश कर देती है ।

(घ)

आप लोग अूपरसे अच्छी लगनेवाली अिस दलीलके भुलावेमें मत आ जाअिये कि भारतमें लोगोसे जबरदस्ती शराब नही छुड़ाना चाहिये और जो शराब पीना चाहें अुनके लिअे सरकारको अैसी सुविधा कर देनी चाहिये । लोगोंकी अनीतिके लिअे राज्य कोअी सुविधा नही कर सकता । वेश्यालयोंको हम परवाने नही देते । चोरके लिअे हम चोरी करनेकी सुविधा नही कर देते । चोरीके और शायद वेश्यागमनके बनिस्वत भी शराब पीनेको मैं ज्यादा निन्दनीय समझता हूं । क्योकि शराबका

और कारखानेदारोंके लिअे अिसे अनिवार्य बना दूं कि वे अपने मजदूरोंके लिअे दयापूर्ण स्थिति पैदा करें और अैसे विश्राम-गृह खोलें, जहां मजदूरोंको निर्दोष पेय और निर्दोष मनोरंजनके साधन मिल सकें।

९

'बीड़ी-सिगरेटसे मैं परेशान हो जाता हूं'

(क)

शराबकी तरह मैं बीड़ी-सिगरेटसे भी परेशान हो जाता हूं। बीड़ी पीनेको मैं अेक दुर्गुण मानता हूं। अिससे मनुष्यका अन्तःकरण जड़ हो जाता है और यह व्यसन अक्सर शराबसे भी आगे बढ़ जाता है, क्योंकि अिसका असर समझमें नहीं आता। यह खर्चीला दुर्गुण है। अिससे सांसमें दुर्गंध आती है, दांतों पर दाग पड़ जाते हैं और कभी कभी केन्सरका रोग भी हो जाता है। यह गन्दा व्यसन है।

(ख)

मैंने सदा यह माना है कि बीड़ी-सिगरेटकी आदत जंगली, गंदी और हानिकारक है।... रेलके

चिपटे रहनेका वास्तवमे कोअी कारण नही है या हम विदेशी हुकूमतकी वुराअियां चालू रखे और अुसकी अच्छाअियां अुसके साथ हिन्दुस्तानसे वेदा हो जायंगी ?

(ख)

अेक पत्रलेखक लिखते हैं कि [घुड़दौड़ और जुआ] साथ साथ चलते हैं । घोड़ोंकी परवरिशके लिअे शर्त बदना और अुसके वारेमे लोगोंको अुत्तेजित करना बिलकुल अनावश्यक है । घुड़दौड़की शर्तसे मनुष्यके दुर्गुणोंका पोषण होता है और अच्छी खेतीके लायक जमीन तथा पैसेका बिगाड़ होता है । शर्त बद कर जुआ खेलनेवाले अच्छे अच्छे लोगोंको मैंने पामाल और तबाह होते देखा है । अैसे लोगोंको किसने नही देखा है ? यह मौका पश्चिमके दुर्गुणोंको छोड़कर अुसके सद्गुण स्वीकार करनेका है ।

(ग)

विदेशी शासक घुड़दौड़ पर जनताके पैसे खर्च करते थे और अुस पर फैशनकी मुहर लगा देते थे । यह मुहर राष्ट्रीय सरकारें अपने अुदाहरणसे आसानीसे हटा सकती हैं । और ये सरकारें भी

सन्देशवाहक तथा मृत जीव दोनोंको हानि पहुंचती है ।

१३

वकीलका आदर्श

वकीलका सच्चा धर्म न्यायाधीशके सामने सद सत्यको पेश करना और सत्यकी शोधमें न्यायाधीशकी मदद करना है । अपराधीको निर्दोष साबित करना कभी वकीलका धर्म नहीं हो सकता ।

१४

पशुका भोग न चढ़ाया जाय

मन्दिरोंमें देवताके सामने पशुका भोग चढ़ाना भगवानका अपमान करने जैसा है । भगवान हमसे क्यों कुछ मांगेगा ? परन्तु यदि वह कुछ मांगे तो हमसे केवल नम्रता और पापका पश्चात्ताप ही मांगेगा

१७

मेरा जीवन-कार्य

हिन्दू, मुसलमान तथा अन्य देशवासियोंको, अंग्रेजोंको और अन्तमें सारे जगतको राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक व्यवहारोंकी व्यवस्थामें अहिंसा-धर्मका पालन करनेवाला बनाना ही मेरा जीवन-कार्य है ।

१८

अहिंसा और खादी

(क)

खादीकी कल्पना मैंने अहिंसाकी बुनियाद और अुसके मूर्त रूपमें की है ।

(ख)

खादी और अहिंसाका मैंने समीकरण बनाया है । खादी गांवोंका मुख्य हाथ-अुद्योग है । आप खादीको मारेंगे, तो गांवोंको और अुनके साथ अहिंसाको भी मार डालेंगे ।

झूलता हूं । आप अिन्हें चरखा दीजिये । फिर किसी भी वहनको घरमें वैठकर सूत कातनेके सिवा दूसरा कोअी धन्धा नही करना पड़ेगा ।

१९

खादीका विश्वरूप-दर्शन

(क)

[वहनोंसे]

अेक कला अैसी है जो आदमीको मारती है; दूसरी कला अैसी है जो अुसे तारती है । विदेशोंसे [या देशी मिलोंसे] लाया हुआ महीन कपड़ा हमारे लाखों भाअी-वहनोंकी अक्षरशः हत्या करता है और हमारी हजारों प्रिय वहनोंको लज्जास्पद जीवन जीनेके लिअे मजवूर करता है । सच्ची कला कलाकारके सुख, सन्तोष और शुद्धिका प्रमाण होनी चाहिये । अैसी कलाको यदि आप देशमें सजीव करना चाहती हैं, तो आप सबको खादीका अुपयोग करना चाहिये ।

[फिर] आपमें से प्रत्येकको फालतू वक्तमें [चरखा चलाना] चाहिये । मैं तो लड़कों और पुरुषोंसे भी

देगी । अुस पर मैं अपने सर्वस्वकी बाजी लगानेके लिअे तैयार हूं । क्योंकि चरखेका हरअेक फेरा शान्ति, सद्भाव और प्रेमके तार निकालता है ।

(झ)

अगर हम भारतमें बाहरसे किसी भी तरहका माल न लाते, तो हमारे यहां आज ॠद्धि-सिद्धिका वास होता ।

अगर हम अपनी जरूरतकी हर चीज अपनी सीमाओंके भीतर ही पैदा कर लें, तो ही कहा जा सकता है कि भारत दूसरोंके लिअे नहीं, बल्कि अपने लिअे जीता है ।

(ञ)

मैं विदेशी माल पर भारी संरक्षक चुंगी लगानेकी हिमायत करूंगा ।

(ट)

भगवानकी कृपा है कि पंजावकी सुन्दर स्त्रियोंने अभी तक अपनी हाथकी कारीगरी खोअी नहीं है । ... वे मेरी गोदमें सूतकी जो गुड़ियां डालती हैं, अुन्हें देख कर मुझे आनन्द होता है ।

देगी । अुस पर में अपने सर्वस्वकी बाजी लगाने
लिअे तैयार हूं । क्योंकि चरखेका हरअेक फे
शान्ति, सद्भाव और प्रेमके तार निकालता है

(झ)

अगर हम भारतमें बाहरसे किसी भी तरह
माल न लाते, तो हमारे यहां आज अृद्धि-सिद्धि
वास होता ।

अगर हम अपनी जरूरतकी हर चीज अप
सीमाओंके भीतर ही पैदा कर ले, तो ही कहा
सकता है कि भारत दूसरोंके लिअे नहीं, बलि
अपने लिअे जीता है ।

(ञ)

मैं विदेशी माल पर भारी संरक्षक चुं
लगानेकी हिमायत करूंगा ।

(ट)

भगवानकी कृपा है कि पंजाबकी सुन्द
स्त्रियोंने अभी तक अपनी हाथकी कारीगरी खोअ
नहीं है । . . . वे मेरी गोदमें सूतकी जो गुड़िया
रखती हैं, अुन्हें देख कर मुझे आनन्द होता है

कम प्रायश्चित्तके रूपमें हमें हाथ-कताओको फिरसे नया जीवन देना चाहिये ।

(त)

अुसे [चरखेको] मैं बाजा मानता हूं, क्योंकि भूखी और नंगी स्त्री पियानोके साथ भी नाचनेसे अिनकार करेगी, जब कि चरखेको घूमते देखकर अैसी स्त्रियोंको मैंने आनन्दमग्न होते देखा है। कारण यह है कि वे जानती हैं कि अिस गांवठी साधनके प्रतापसे अुन्हें खाना और कपडा मिल सकता है ।

(थ)

हिन्दुस्तानमें कपास पैदा होती है, अिसलिअे विदेशोंसे अेक गज सूत भी मंगाना गुनाह समझा जाना चाहिये ।

(द)

देशके ६ करोड घरोंमें से प्रत्येक घरमें चरखा कैसे चालू किया जाय, यही हमारी समस्या है।

(ध)

चरखा भारतके साढ़े सात लाख गांवोंमें : पहुंचानेका अुत्तम साधन है । [अिन

कम प्रायश्चित्तके रूपमें हमें हाथ-कताओको फिरसे नया जीवन देना चाहिये ।

(त)

अुसे [चरखेको] मैं बाजा मानता हूं, क्योंकि भूखी और नंगी स्त्री पियानोके साथ भी नाचनेसे अिनकार करेगी, जब कि चरखेको घूमते देखकर अैसी स्त्रियोंको मैंने आनन्दमग्न होते देखा है। कारण यह है कि वे जानती हैं कि अिस गावदी साधनके प्रतापसे अुन्हें खाना और कपड़ा मिल सकता है ।

(थ)

हिन्दुस्तानमें कपास पैदा होती है, अिसलिअे विदेशोंसे अेक गज सूत भी मंगाना गुनाह समझा जाना चाहिये ।

(द)

देशके ६ करोड घरोंमें से प्रत्येक घरमें चरखा कैसे चालू किया जाय, यही हमारी समस्या है।

(ध)

चरखा भारतके सात लाख गांवोंमें शिक्षाको पहुंचानेका अुत्तम साधन है। [अिस

ही वह दुनियाको अैसा अुपदेश देनेके लिअे समर्थ हो सकता है ।

(फ)

खेती और हाथ-बुनाअी अिस राष्ट्र-शरीरके दो फेफडे हैं । अुनका क्षय न हो, अैसी व्यवस्था हमें किसी भी कीमत पर करनी चाहिये ।

(ब)

जिस प्रकार महामारीके कीटाणुओंसे दूषित बनी हुअी चीजोंका नाश ही अुनका सबसे किफायत-शारीका और अुत्तम अुपयोग है, अुसी प्रकार विदेशी कपड़ेका नाश ही अुसका ज्यादासे ज्यादा किफायत-शारीका अुपयोग है ।

(भ)

आंखमें जिस तरह कचरा आकर घुस जाता है, अुसी तरह विदेशी कपड़ा हमारे देशमें आ घुसा है । शरीरके स्वास्थ्यकी रक्षाके लिअे आंखमें कचरा निकाल डालना जितना जरूरी है, अुतना ही देशके स्वास्थ्यकी रक्षाके लिअे विदेशी कपड़ेका नाश करना जरूरी है ।

२०
राष्ट्रध्वज

अगर हमें अहिंसक शक्ति बढ़ानी हो, तो हमें चरखेको अपनाना चाहिये और अुसका पूरा अर्थ समझना चाहिये। अुसके बाद हम तिरंगे झंडेका गीत गा सकेंगे। आज हमारे झंडेमें चरखेका चक्र ही रह गया है। . . . लेकिन पहले-पहल तिरंगा झंडा बना, तब अुसका अर्थ यही था कि भारतकी सब जातियां हिलमिल कर काम करें और चरखेके द्वारा अहिंसक शक्तिका संगठन करें। आज भी अिस चरखेमें अपार शक्ति भरी है। . . . अहिंसा बहादुरीकी पराकाष्ठा है। यह बहादुरी अगर हमें बतानी हो, तो समझ-बूझकर हमें चरखेको अपनाना चाहिये। . . . ५–७ बरससे अूपरके लड़के-लड़की और बड़ी अुमरके स्वस्थ स्त्री-पुरुष सब कातें, तो कपड़ेकी तंगी कभी मालूम न पड़े और देशके करोड़ों रुपये बच जायं। लेकिन अिसका अुतना महत्त्व नहीं है। सबसे महत्त्वकी बात तो यह है कि देशके करोड़ों आदमियोंके मिल कर काम करनेसे जो शक्ति पैदा होगी, अुसके

भगवान देता है । जो चींटीको भी अिरादतन् पैर तले कुचलता नहीं वह अुसकी सेवा करता है । और चींटीको अिस तरह ज्ञानपूर्वक कष्ट न देनेवाला आदमी दूसरे प्राणीको या अपनी ही जातिको — मानव प्राणीको — कष्ट नही पहुंचायेगा । हर जगह हर समय सेवाका ढंग बदलता है; परन्तु वृत्ति अेक ही होती है । दुःखीकी सेवा करनेमें औश्वरकी सेवा होती है । अुस सेवामें विवेक जरूर होना चाहिये । भूखेको अन्न देनेमें हमेशा सेवा ही होती है, अैसा माननेका कोओ कारण नही । आलसी आदमी दूसरेके आसरे बैठा रहे और अन्नकी आशा रखे, तो अुसे अन्न देनेमे पाप है । अुसे काम देनेमें पुण्य है । लेकिन वह काम करनेको तैयार ही न हो, तो अुसे भूखा रहने देनेमें ही अुसकी सेवा है । औश्वरका नाम जपना और पूजापाठ करना जरूरी है, क्योंकि अुससे आत्मशुद्धि होती है; और आत्मशुद्ध मनुष्य अपना मार्ग स्पष्ट देख सकता है । लेकिन पूजापाठ ही औश्वर-सेवा नहीं है, वह अुस सेवाका साधनमात्र है । अिसीलिअे नरसिंह महेताने गाया है :

डॉ० अेमिल बोगेननें १०० सिगरेट पीने वाले लोगो
जाच की। अुनमें से ३० आदमियोंने मुहमें छा ले पड़ जाने
और ३० आदमियोंने (ये पहले ३० से भिन्न ये) खासी
शिकायत की।

बीड़ी-सिगरेट पीनेसे भूख मर जाती है और
खराब हो जाता है। अमरीकी अस्पतालोंमें पेट के फोड़ेवाले
कहा जाता है कि वे बीडी-सिगरेट न पियें।

बीडी-सिगरेट पीनेसे नाडी कभी कभी २ ८ बार
औसतन् १० बार अधिक धडकती है।

बीडी-सिगरेट पीनेसे अरिदिमिया (तालशून्यता
हो जाता है, अर्थात् हृदय अनियमित गतिसे रु होता है
कूदता है, जिससे मनुष्यको बार बार घबराहट होती
मा अगर बीडी-सिगरेट पीनेवाली हो, तो गर्भके बालक
नाडीकी धडकन बढ जाती है। बीडी-सिगरेट पीनेवाले
हृदयकी धडकन (पल्पिटेशन) न पीनेवालोंकी अपेक्षा
प्रतिशत ज्यादा होती है।

बीडी-सिगरेट पीनेसे खूनका दबाव अेकदम बढ
बढ जाता है। मनुष्यका खूनका दबाव जितना अूचा हो
है, अुतना ही बीडी-सिगरेट अुसे और अूचा ले जाती है

बीडी-सिगरेट पीनेसे रक्त-शिरायें (खास कर के हाथ-पैरकी
की) सकुचित हो जाती है। अुगलियोंके नखके नीचे की बारीक
रक्त-शिरायें तो बार-बार बिलकुल बन्द हो जाती है
आदमीके बीडी-सिगरेट पीना शुरू करते ही हाथ

५० से कम अुमरवाले लोगोंमें, जो बीड़ी-सिगरे
थे, १ प्रतिशतको हृदय-रोग था, जब कि पीने
प्रतिशतको यह रोग था। हार्वर्डके हृदय-शास्त्र
लेविन कहते है कि मैं हृदय-रोगसे पीड़ित
बीड़ी-सिगरेट छोडनेकी सलाह देता हूं।

केन्सरके रोगियोंमें ९५ प्रतिशत नियमित बे
पीनेवाले होते हैं और ½ प्रतिशत न पीनेवाले
न्यू ऑर्लियन्सके डॉ॰ ऑचस्नरका विश्वास है
सिगरेट पीने और फेफड़ोंके केन्सरके बीच निश्चि
है। जबानके केन्सरके बीमार ज्यादातर बहुत बी
पीनेवाले ही होते है।

जॉन हॉप्किन्सके डॉ॰ रेमंड पर्लने लगभग
केसोंका अध्ययन किया। अुसमें मालूम हुआ कि १
सिगरेट न पीनेवालोंमें से ६६, १०० कम पीनेवालों
तथा १०० बहुत पीनेवालोंमें से ४६ आदमी जी
वर्ष पूरे करते हैं। अैंड्रू साल्टर कहते हैं कि "बहु
सिगरेट पीनेवाला आदमी हर सिगरेटके पीछे अपन
से ३४६ मिनटकी आयु कम करता है; रोजकी २०
पीनेवाला हर डिबियाके पीछे ११.५ घंटे कम जी
'रिस्क अेप्रेजल' में मि॰ डिगमैन लिखते हैं कि बीड़ी-
व्यसनीको दमा ६२ प्रतिशत, जुकाम ६५ प्रतिशत, मान
१४० प्रतिशत, गलेकी खराबी १६७ प्रतिशत और
३०० प्रतिशत अधिक होती है।

५० से कम अुमरवाले लोगोंमें, जो बीडी-सिगरेट नहीं पीते थे, १ प्रतिशतको हृदय-रोग था, जब कि पीनेवालोंमें ४८ प्रतिशतको यह रोग था। हार्वडके हृदय-शास्त्री सेम्युअल लेविन कहते हैं कि मैं हृदय-रोगसे पीड़ित आदमीको बीडी-सिगरेट छोड़नेकी सलाह देता हूं।

केन्सरके रोगियोंमें ९५ प्रतिशत नियमित बीड़ी-सिगरेट पीनेवाले होते हैं और ½ प्रतिशत न पीनेवाले होते हैं। न्यू ऑलियन्सके डॉ० ऑचस्नरका विश्वास है कि बीडी-सिगरेट पीने और फेफडोंके केन्सरके बीच निश्चित सम्बन्ध है। जबानके केन्सरके बीमार ज्यादातर बहुत बीड़ी-सिगरेट पीनेवाले ही होते हैं।

जॉन हॉप्किन्सके डॉ० रेमंड पर्लने लगभग ७,००० केसोंका अध्ययन किया। अुसमें मालूम हुआ कि १०० बीडी-सिगरेट न पीनेवालोंमें से ६६, १०० कम पीनेवालोंमें से ६१, तथा १०० बहुत पीनेवालोंमें से ४६ आदमी जीवनमें ६० वर्ष पूरे करते हैं। अेड्रू साल्टर कहते हैं कि "बहुत बीडी-सिगरेट पीनेवाला आदमी हर सिगरेटके पीछे अपनी आयुमें से ३४६ मिनटकी आयु कम करता हैं; रोजकी २० सिगरेट पीनेवाला हर डिबियाके पीछे ११५ घंटे कम जीता है।" 'रिस्क अेप्रेज़ल' में मि० डिंगमैन लिखते हैं कि बीड़ी-सिगरेटके व्यसनीको वायु ६२ प्रतिशत, जुकाम ६५ प्रतिशत, साम-बझाअी १४० प्रतिशत, गलेकी खराबी १६७ प्रतिशत और खांसी ३०० प्रतिशत अधिक होती है।